WE
Vol 4 No. 1
June 2023
e-ISSN: 2583-2298

दृश्य नृविज्ञान के परिवर्तित प्रतिमान: वर्तमान परिदृश्य की एक मांग

शुचि श्रीवास्तव*

सारांश

दृश्य नृविज्ञान दृश्य प्रणालियों का अध्ययन है, यह चलचित्रों एवं छायाचित्रों से जुड़ा संस्कृति का एक विशेष अध्ययन है। दृश्य नृविज्ञान का मानवशास्त्रीय क्षेत्रकार्य में एक लंबा इतिहास रहा है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य दृश्य नृविज्ञान में कालानुक्रमिक विकास के उद्भव चरण, निर्माण चरण, औपचारिक चरण, भागीदारी चरण एवं हस्तक्षेप चरण में समय के साथ आये बदलते रुझानों एवं प्रतिमानों के विश्लेषणात्मक विवरण को प्रस्तुत करना है। यह लेख मानव कल्याण के लिए व्यावहारिक दृश्य तकनीकों और मानवशास्त्रीय अवलोकन एवं अंतर्दृष्टि के संचार के लिए उपयोगी विधियों में वृद्धि एवं विकास का एक गहन पुनरावलोकन प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: *दृश्य नृविज्ञान, दृश्य प्रणाली, छायाचित्रण, चलचित्रण, मानवशास्त्रीय क्षेत्रकार्य*

1. प्रस्तावना

नृविज्ञान एक प्रतिनिधित्वात्मक व्यवस्था है, जो सांस्कृतिक अनुवाद और व्याख्या की क्रिया में सम्मिलित है। मानवविज्ञानी समाज और संस्कृति के विशिष्ट प्रतिनिधित्व को ध्यान में रखते हुए लोगों के जीवन से जुड़ना चाहते हैं। मानवविज्ञानी लोगों द्वारा बनाए गए उन चित्रों के विषय में जानने में रुचि रखते हैं जिन्हें या तो मनुष्यों द्वारा चित्रित किया गया हो या वे कैमरों द्वारा लिए गए छायाचित्र एवं चलचित्र हों। वे दृश्य नृविज्ञान विशेषज्ञता के तहत दृश्य प्रणाली का अध्ययन करते हैं, जिसमें नृवंशविज्ञान छायाचित्रण और नृवंशविज्ञान चलचित्र सम्मिलित हैं। सचित्र और दृश्य अध्ययन के लिए उनका दृष्टिकोण समावेशी, गैर-न्यायिक और पार सांस्कृतिक है। वे हर उस दृश्य वस्तु का अध्ययन करना चाहते हैं जो किसी भी समय या स्थान के लोगों द्वारा बनाई गई है।

2. दृश्य नृविज्ञान

दृश्य नृविज्ञान संस्कृति का एक विशेष अध्ययन है जिसमें छायाचित्र एवं चलचित्र सम्मिलित हैं। यह दृश्य प्रणाली का अध्ययन है अर्थात चीजें कैसे देखी जाती हैं और जो देखा जाता है उसे कैसे समझा जाता है। जैकनिंस का कहना है कि इसमें "छायाचित्रों का उत्पादन और विश्लेषण, कला और भौतिक संस्कृति का अध्ययन, भाव भंगिमा का अन्वेषण तथा चेहरे की अभिव्यक्तियों और व्यवहार एवं बातचीत के स्थानिक पहलुओं की पड़ताल" सम्मिलित है। (जैकनिन्स, 1994) इस प्रकार से, वह केवल दृश्य आंकड़ों के उत्पादन और विश्लेषण के संबंध में इसके तरीकों और दायरे पर चर्चा करते हैं, लेकिन बैंक्स और मॉर्फी के अनुसार यह उससे कहीं अधिक है, जैसा कि वे तर्क देते हैं कि "दृश्य नृविज्ञान मानवविज्ञान की पूरी प्रक्रिया से संबंधित है - आंकड़ों को एकत्रित करने से इसके विश्लेषण द्वारा अनुसंधान के परिणामों तक पहुँचने के लिए।" (बैंक्स एवं मोर्फी, 1997)

3. दृश्य नृविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्रौद्योगिकी के संदर्भ में, दृश्य नृविज्ञान की यात्रा प्लेट कैमरे के साथ शुरू हुई, लेकिन बाद में हाथ में थामें जा सकने वाले कैमरों और अंततः सिने-कैमरों ने कार्यों की मात्रा और गुणवत्ता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। वर्तमान परिदृश्य में, छायाचित्रण एवं चलचित्रण प्रौद्योगिकियों के डिजिटलीकरण और विश्व व्यापी वेब ने दृश्य नृविज्ञान के सामने वैश्विक गतिशीलता के नए मुद्दे रखे हैं।

दृश्य नृविज्ञान की भूमिका पर चर्चा करते हुए, इसे दो पहलुओं में वर्गीकृत किया जा सकता है: संस्कृति की चित्रात्मक अभिव्यक्ति और मानवशास्त्रीय ज्ञान को संप्रेषित करने के लिए चित्रात्मक संचार माध्यम। इसकी शुरुआत कुछ व्यावसायिक छायाचित्रकारों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक पहलुओं के छायाचित्रण के साथ की गई थी। (गैरिसन, 2000; विल्सन, 2013)

*असिस्टेंट प्रोफेसर, मानव विज्ञान विभाग, नेशनल पी0 जी0 कॉलेज, लखनऊ; लखनऊ विश्वविद्यालय का एक स्वायत्तशासी महाविद्यालय। ई-मेल: shuchi.anthro@gmail.com

फिर मानवविज्ञानी और गैर-मानवविज्ञानी दोनों द्वारा नृवंशविज्ञान प्रजातियों के वर्गीकरण के लिए, प्रदर्शनी उद्देश्यों से, शरीरिक हाव भाव के अध्ययन के लिए और आधुनिकीकरण के परिणामस्वरूप विलुप्त हो रही संस्कृतियों की प्रथाओं के प्रमाण एकत्रित करने के लिए छायाचित्रण एवं चलचित्रण का प्रयोग किया गया। (रेगनॉल्ट, 1885; रेगनॉल्ट, 1895; लाजार्ड एवं रेग्नॉल्ट, 1895; वैकोविच, 2009; बैंक्स एवं वोक्स, 2010; कर्टिस, 2015)

क्षेत्रकार्य में छायाचित्रण और चलचित्रण के औपचारिक उपयोग के साथ, अनेक मानवविज्ञानियों ने भी अपने क्षेत्रकार्य में छायाचित्रण का उपयोग आरम्भ किया, लेकिन उस समय इसका उपयोग केवल विवरणों के चित्रण के लिए और वस्तुनिष्ठ उद्देश्यों से किया जाता था। (बोआस, 1895; हैडेन, 1898-1899; स्पेंसर, 1901; फ़्लेहर्टी, 1922; मैंलिनॉस्की, 1922; रेडक्लिफ-ब्राउन, 1922; एडवर्ड्स, 1992; वैकोविच, 2009; गिब्सन 2015; हेरले एवं अन्य, 2015) बाद के शोध में, कैमरे का उपयोग तथ्यों के संकलन और विश्लेषण के लिए एक तकनीक के रूप में किया गया और कई नृवंशविज्ञान चलचित्र निर्माताओं ने देशज जीवन और संस्कृति के बारे मे तथ्यों को को नए मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण के साथ अपने कैमरों के माध्यम से संग्रहित कर इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। (बेटसन एवं मीड, 1942; पाउडरमेकर, 1950; मीड एवं बेटसन, 1952; मीड एवं मेट्रॉक्स, 1953; गार्डनर, 1963; ऐश 1975; रूबी, 1995; मार्शल, 2002; डूरिंगटन, 2004; बैंक्स एवं रूबी, 2011; हेन्ले, 2013)

आगे चलकर, अधिक गहन और वस्तुनिष्ठ अध्ययनों के लिए आत्मवाचक, सहभागी और संवाद पद्धतियों को प्रस्तुत किया गया, (रॉच, 1955; वर्थ एवं एडेयर, 1972क; वर्थ एवं अडेयर, 1972ख; गिंडी, 1998; हिम्पेले एवं जिन्सबर्ग, 2005; वैकोविच, 2009; मैकडॉगल, 2012; अशर, 2015) जिसने अंततः सामाजिक, पर्यावरण और स्वास्थ्य मुद्दों एवं समस्याओं को दूर करने के लिए समुदाय-आधारित सहभागी अनुसंधान में छायाचित्र स्वर (फोटोवॉइस) के उपयोग के साथ व्यावहारिक हस्तक्षेप का नेतृत्व किया। (वॉंग एवं बुरिस, 1994; वॉंग एवं बुरिस, 1997; सटन-ब्राउन, 2014; एमटाय एवं अन्य, 2021; चक्रबर्ती एवं अन्य, 2021)

इस प्रकार दृश्य नृविज्ञान के आरंभ से अब तक इसके लक्ष्यों, उद्देश्यों, तकनीकों, विधियों, रणनीतियों, दृष्टिकोणों और अनुप्रयोगों में समय के साथ हुए इन कालानुक्रमिक परिवर्तनों को व्यापक स्तर पर विभिन्न चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है: उद्भव चरण, निर्माण चरण, औपचारिक चरण, भागीदारी चरण एवं हस्तक्षेप चरण। (श्रीवास्तव, 2022)

4. दृश्य नृविज्ञान के परिवर्तित प्रतिमान

दृश्य नृविज्ञान "मनुष्य का अध्ययन है जो इस पर आधारित है कि वह क्या है जो केवल देखने के लिए प्रस्तुत किया जाता है और जांच के गैर-मौखिक उपकरणों के माध्यम से समझा जाता है।" (मीड, 1974) संस्कृति के दृश्य पक्षों के अध्ययन का एक दीर्घकालीन इतिहास रहा है। समय बीतने के साथ इस क्षेत्र में कई ज्ञानशास्त्रीय और पद्धतिगत विकास हुए हैं, जिसके कारण पहले का दृष्टिकोण आज अवास्तविक लगता है। (डायोन, 2007) तकनीकी, नैतिक और ज्ञानमीमांसा संबंधी विचारों में नई संस्तुतियाँ उभर कर सामने आई हैं, जिसने क्षेत्रकार्य और शोध में दृश्य नृविज्ञान की कार्यप्रणाली और भूमिका में बदलते रुझानों को प्रस्तुत किया हैं। (श्रीवास्तव, 2022) समय के साथ आए इन विभिन्न परिवर्तनों को निम्न पक्षों में देखा जा सकता है:

1. छायाचित्र पत्रकारों एवं व्यवसायिक छायाचित्रकारों के कार्यों से अंतःविषय स्तर तक: कैमरे के आविष्कार के पश्चात इसका उपयोग विभिन्न सांस्कृतिक पहलुओं को प्रदर्शित करने के लिए छायाचित्रण से आरंभ हुआ, किन्तु इस दिशा में कार्य कर रहे यह प्रथम छायाचित्रकार प्रशिक्षित मानवविज्ञानी नहीं थे, बल्कि कुछ छायाचित्र पत्रकार एवं व्यावसायिक छायाचित्रकार थे, जो कि कैमरे कि मदद से सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के विभिन पक्षों को प्रदर्शित करने का प्रयास कर रहे थे। (चित्र-1)
   उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में, अकादमिक मानवविज्ञानियों ने अध्ययन किए गए लोगों के छायाचित्रों का उत्पादन और संग्रह करना आरंभ किया। फिर नृवंशविज्ञान विवरण में छायाचित्रों और चलचित्रों के पूरक उपयोग को जोड़ा गया। बाद में, दृश्य मानवविज्ञान में आत्मवाचक, सहभागी और संवाद पद्धतियों को अधिक यथार्थ अध्ययनों के लिए विकसित किया गया। अंततः, विषय में छायाचित्र स्वर तकनीक के उपयोग के साथ हस्तक्षेप

अनुसंधान आरंभ हुए। वर्तमान परिदृश्य में, दृश्य मानविज्ञान में आरंभ हुई इस छायाचित्र स्वर तकनीक के साथ किए जा सकने वाले इन हस्तक्षेप अनुसंधानों का उपयोग अंत:विषय स्तर पर सामाजिक, पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों और समस्याओं के समाधान के लिए समुदाय आधारित सहभागी अनुसंधान में किया जाता है। (चित्र-2)

चित्र-1: छायाचित्र पत्रकार मैथ्यू बेंजामिन ब्रैडी द्वारा लिया गया एक छायाचित्र जो परित्यक्त शिविर और एक संघीय ज़ौवे रेजिमेंट, 1865, के एक घायल सैनिक को दर्शाता है| (विल्सन, 2013)

चित्र-2: तंजानिया में जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुए एक अध्ययन – 'फ्रॉम इमेजेज टू वॉइसेज' में एचआईवी/एड्स से पीड़ित लोगों की चिकित्सा और सामाजिक समर्थन की आवश्यकताओं पर आधारित एक फोटो विश्लेषण में रोगी संख्या-3 द्वारा दर्शित छायाचित्र स्वर छवि – 'भोजन की बार-बार कमी' (मकांटा एवं अन्य, 2018)

2. कुछ भौतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक आयामों से दशकों की परिणति तक: विषय के विकास के प्रारंभिक चरण में खोजकर्ताओं, मिशनरियों और यात्रियों इत्यादि को मानवशास्त्रीय रुचि के दृश्य आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए नियुक्त किया गया था, जिसमें आदिम लोगों के शरीर, वेशभूषा, आभूषण और उपकरण आदि के छायाचित्र सम्मिलित थे क्योंकि उस दौरान, मानवविज्ञानी भौगोलिक और लौकिक श्रेणियों के अनुसार विश्व जनसंख्या के वर्गीकरण एवं सामाजिक-सांस्कृतिक उद्विकास के तथाकथित प्रमाण के रूप में छायाचित्रों का उपयोग करते थे। (चित्र-3) उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में, अकादमिक मानवविज्ञानियों ने अध्ययन किए गए लोगों के छायाचित्रों का उत्पादन संग्रह क्षेत्र में जाकर स्वयं करना आरंभ किया और तथाकथित 'संग्रह क्लब' के माध्यम से छायाचित्रों का आदान-प्रदान कर उन्हे आपस में साझा किया। इस प्रकार से, मानव विज्ञान में कुछ ही भौतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक आयामों के छायाचित्रण से दृश्य आँकणों का संग्रह आरंभ हुआ, जिसका

स्थान आगे चलकर सम्पूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन को प्रदर्शित करते नृवंशविज्ञान चलचित्रों ने लिया जो की नृविज्ञान के सांस्कृतिक सापेक्षवाद दृष्टिकोण के साथ बनाए गए। यहाँ तक कि कुछ ऐसे नृवंशविज्ञान चलचित्र भी बने जो किसी जनजातीय समूह के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन की कई दशकों की परिणति को दर्शाते हैं। (चित्र-4)

चित्र-3: 'द न्यू ग्रेशम एनसाइक्लोपीडिया' में मनुष्य के विविध प्रजातीय प्रकारों को चित्रित करते छायाचित्र (द न्यू ग्रेशम इनसाइक्लोपीडिया, 1922)

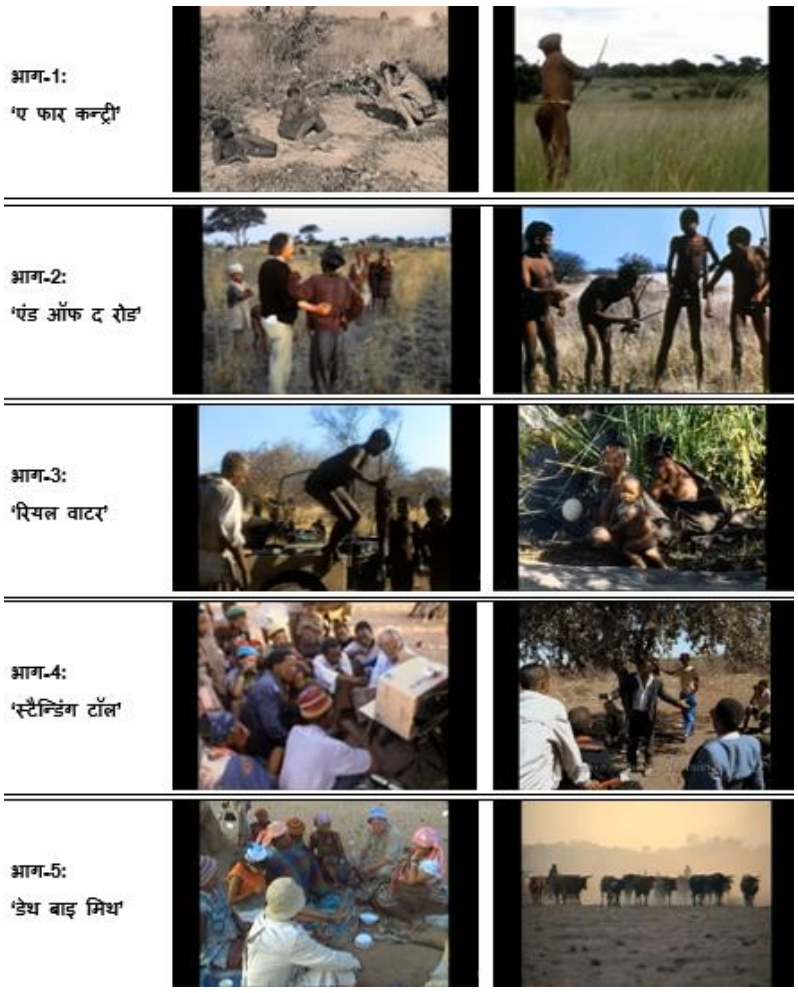

चित्र-4: जॉन मार्शल द्वारा बने एक चिंतनशील वृत्तचित्र - 'ए कालाहारी फैमिली', के सभी 5 भागों (1951-2000) के दृश्य (मार्शल, 2002)

3. शारीरिक आयामों से नृवंशविज्ञान यथार्थता तक: पहले भौतिक मानवविज्ञानियों ने दृश्य-छायाचित्र सूचकांकों की एक श्रृंखला का उपयोग किया, जिसमें शारीरिक और समूह चित्र, चलचित्र फुटेज और प्रजातीय जैवमिति दृश्य आँकड़ें आदि सम्मिलित थे। (चित्र-5) किन्तु आगे चलकर दृश्य-छायाचित्रों एवं चलचित्रों का प्रयोग सामाजिक-सांस्कृतिक मानवविज्ञान में मानव जीवन के विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयामों के विवरणों को मानववैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ प्रदर्शित करने के लिए किया गया, जिसमें नृवंशविज्ञान छायाचित्रों एवं नृवंशविज्ञान चलचित्रों के माध्यम से दूरस्थ समाजों के जीवन और रीति-रिवाजों को दर्शाया गया। इन कार्यों के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि मानवविज्ञानी कैसे अपने अनुभव को समझते हैं और उन्हे सार्थक शब्दों के साथ बोधनीय स्थिर एवं चलती छवियों में परिवर्तित करते हैं। आगे चलकर इस प्रकार के कार्यों में और अधिक वास्तविकता सम्मिलित करने के लिए 'सिनेमा-वेराइट' जैसे संस्करणों को परिकल्पित किया गया जिसमें मानवविज्ञानी चलचित्र निर्माता और चलचित्रित लोगों को नृवंशविज्ञान यथार्थवाद के निर्माण में सहयोगी के रूप में सम्मिलित किया गया। (चित्र-6)

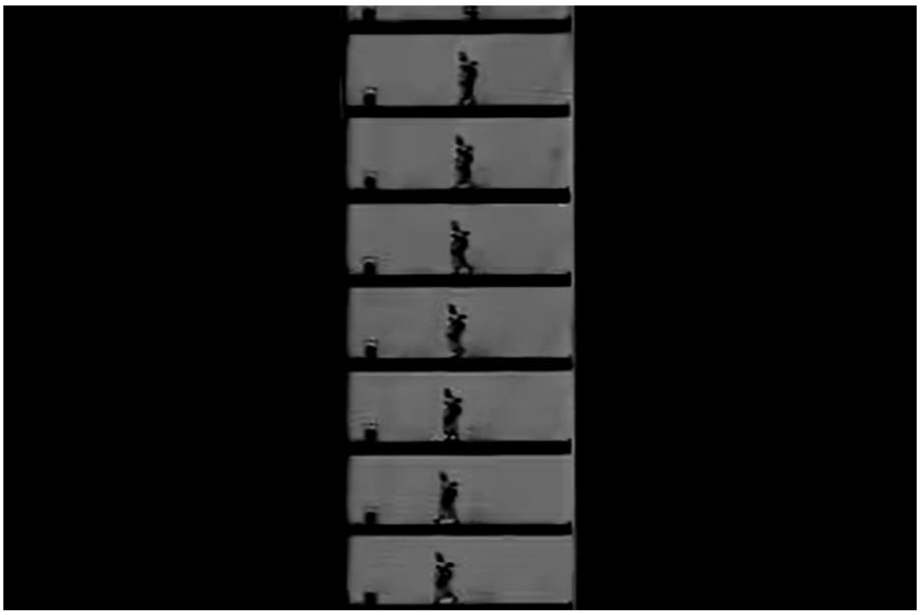

चित्र-5: फ़ेलिक्स-लुई रेग्नॉल्ट द्वारा क्रोनोफोटोग्राफ़िक शॉट्स में सम्मिलित – 'पीठ पर बंधे बच्चे के साथ एक अफ़्रीकी महिला की रिकॉर्डिंग' के दृश्य (रेगनॉल्ट, 1895)

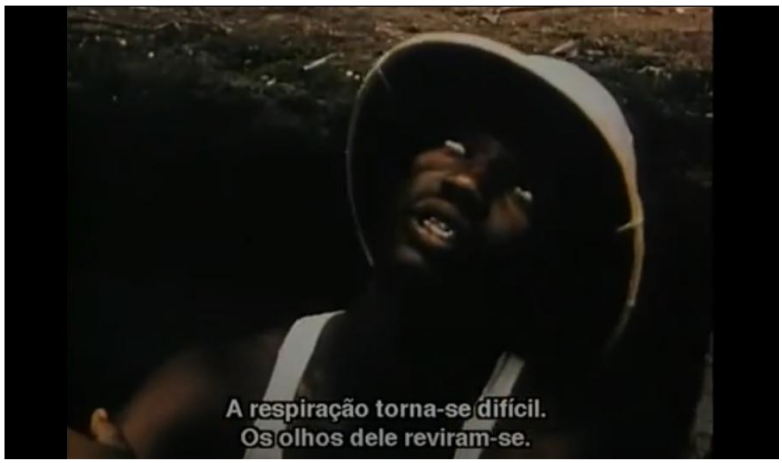

चित्र-6: जीन रॉच द्वारा चलचित्रित 'सिनेमा-वेराइट' संस्करण – 'लेस माइट्रेस फ्यूस' में प्रदर्शित एक दृश्य (रॉच, 1955)

4. मानवविज्ञानी दृष्टिकोण के अभाव से मानवविज्ञानी प्रशिक्षण तक: 1880 के दशक में, नृविज्ञान के एक अकादमिक विषय के रूप में उभरने से पहले, नृवंशविज्ञानियों ने अपने शोधों में छायाचित्रों का प्रयोग किया, जिसके अंतर्गत इन गैर-मानवविज्ञानी नृवंशविज्ञानियों ने विलुप्त हो रहे समुदायों कि संस्कृति एवं प्रथाओं का दस्तावेजीकरण आने वाली पीढ़ियों के लिए करने का प्रयास किया। (चित्र-7) मानवविज्ञानी प्रशिक्षण के अभाव

में किए गए ये कार्य विषयनिष्ठ थे अर्थात इनमें आदिम जीवन के केवल उन्ही पक्षों को प्रदर्शित किया गया जिसकी तरफ पाश्चात्य दुनिया आकर्षित हुई। अतः यह छायाचित्र मुख्य रूप से प्रदर्शनी उद्देश्यों से लिए गए। किन्तु आगे चलकर प्रशिक्षित मानवविज्ञानियों द्वारा ऐसे नृवंशविज्ञानी चलचित्र बनाए गए जो न केवल आदिम समाजों के जीवन और रीति-रिवाजों को सांस्कृतिक सापेक्षतवाद के साथ प्रदर्शित करते थे बल्कि उनका उपयोग शोध, संग्रह एवं शिक्षण उपकरण के रूप में भी किया गया। शैक्षिक कक्षाओं में ये चलचित्र मानवविज्ञान के छात्र-छात्राओं को दृश्य मानवविज्ञान में प्रशिक्षित करने के लिए तो प्रयुक्त किए ही गए, साथ ही छात्र-छात्राओं की प्रतिक्रिया के आधार पर उन्हें समय-समय पर पुनः संपादित भी किया गया ताकि इन्हे और अधिक समझने योग्य और शिक्षण के लिए आदर्श बनाया जा सके। (चित्र-8)

चित्र-7: अमेरिकी छायाचित्रकार और नृवंशविज्ञानी एडवर्ड शेरिफ कर्टिस द्वारा लिया गया नोआटक परिवार समूह का एक छायाचित्र (कर्टिस, 2015)

चित्र-8: शिक्षण के लिए प्रयुक्त टिमोथी ऐश द्वारा चलचित्रित एक नृवंशविज्ञान चलचित्र - 'द एक्स फाइट' का एक दृश्य, (एश, 1975)

5. सांस्कृतिक दृश्यरतिकता से नैतिकता और सहयोग तक: पहले के समय में, व्यक्तियों की जानकारी के बिना उनके छायाचित्रों को लेना या चलचित्रों को बनाना उस समय की औपनिवेशिक मानसिकता के कारण किसी विशेष नैतिक दुविधा का कारण नहीं प्रतीत होता था। मीड और बेटसन ने उन स्थानों एवं परिस्थितियों में जाकर

चलचित्रों को बनाया जहां लोग स्वयं बाह्य व्यक्तियों के सामने आना भी पसंद नहीं करते थे। (चित्र-9) हालाँकि, ये प्रथाएँ उस समय सामान्य लगती थीं, लेकिन वर्तमान समय में उसी तरीके से कार्य करना अकल्पनीय है। आज, कोई भी किसी व्यक्ति की छायाचित्र या चलचित्र उसकी अनुमति के बिना नहीं ले सकता है या उसे उसकी सहमति के बिना प्रकाशित नहीं कर सकता है, क्योंकि गोपनीयता, सहमति, वास्तविक जानकारी और प्रामाणिकता से संबंधित विभिन्न शोध नैतिकताएं हैं जिनका पालन किया जाना अनिववार्य है। यह भी अनुभव किया गया कि लोगों की असहमति या सहमति से उनके चलचित्र बनाने की कोशिश करने के बजाय एक सहयोगी दृष्टिकोण विकसित किया जाना चाहिए एवं उत्तरदाताओं के हाथ में कैमरा दिया जाना चाहिए। (चित्र-10)

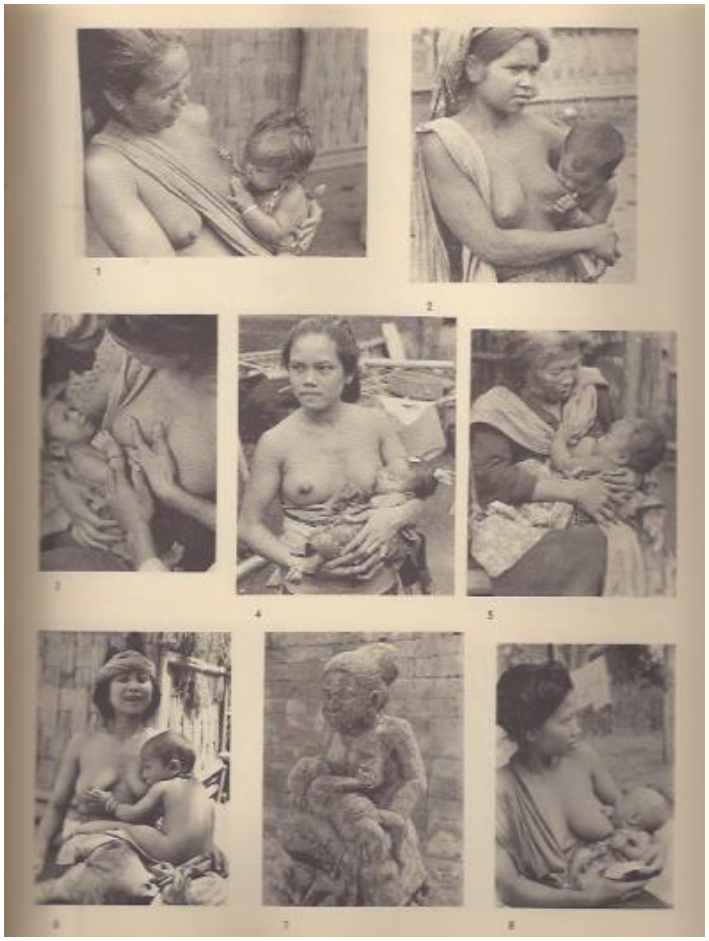

चित्र-9: मार्गरिट मीड और ग्रेगरी बेटसन द्वारा लिए गए बालिनीज संस्कृति में माँ द्वारा बच्चे को दूध पिलाने के छायाचित्र (बेटसन एवं मीड, 1942)

चित्र-10: सोल वर्थ और जॉन अडायर द्वारा पर्यवेक्षित एक चलचित्र – 'नवाजो फिल्म देमसेल्व्स' के ट्रेलर के एक दृश्य में नवाजो महिला के हाथ में कैमरा (वर्थ एवं अडेयर, 1972ख)

6. पूरक उपयोग से विश्लेषणात्मक कार्यों तक: हालांकि दृश्य नृविज्ञान के अग्रदूतों ने अक्सर बड़ी मात्रा में छायाचित्र सामग्री का उत्पादन किया, लेकिन उन्होंने वास्तव में कभी भी अपने छायाचित्रों की क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं किया। उस समय, छवि को दो कार्यों में बांट दिया गया था: शाब्दिक विवरण का चित्रण और निष्पक्षता। उन्होंने एक व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता पर बल दिया। पूरे विश्लेषण के दौरान उन्होंने अपने विवरणों के समर्थन में क्षेत्र में लिए गए विभिन्न छायाचित्रों को प्रस्तुत किया और उन्हें पाठकों के लिए संदर्भित किया। वे मुख्य रूप से इनका उपयोग अपने अवलोकनों की सत्यता के प्रमाण के रूप में करते थे। (चित्र-11) इस प्रकार से, दृश्य तथ्यों का उपयोग केवल पूरक था। लेकिन आगे चलकर, अनुसंधान में छायाचित्रण और गैर-काल्पनिक चलचित्र निर्माण आँकणें संग्रहण और विश्लेषण के महत्वपूर्ण उपकरण बन गए। दूरस्थ संस्कृति के अध्ययन की पद्धति ने इसे और अधिक प्रोत्साहन दिया। इस प्रकार, ये उपकरण वैज्ञानिक नृवंशविज्ञान विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण भाग बन गए हैं। (चित्र-12)

चित्र-11: रैडक्लिफ़ ब्राउन की पुस्तक 'द अंडमान आइलन्डर्स' में दर्शित तीर-धनुष से मछली मारते हुए एक अंडमान द्वीपवासी का छायाचित्र (रेडक्लिफ-ब्राउन, 1922)

चित्र-12: बाली के एक अनुष्ठानिक नृत्य के विश्लेषणात्मक विवरण हेतु मार्गरिट मीड और ग्रेगरी बेटसन द्वारा बनाए गए एक लघु वृत्तचित्र - 'ट्रान्स एंड डांस इन बाली' का एक दृश्य (मीड एवं बेटसन, 1952)

7. प्रकल्पित वस्तुनिष्ठता से सापेक्ष वस्तुनिष्ठता तक: प्रारंभ में, मानवविज्ञानी मानते थे कि छायाचित्र उनके

अवलोकनों को अभिलेखित करने का एक वस्तुनिष्ठ साधन है और इसके माध्यम से वे अपनी क्षेत्र टिप्पणियों से व्यक्तिपरकता हट सकते हैं। (चित्र-13) लेकिन छायाचित्रों की वस्तुनिष्ठता पर शीघ्र ही प्रश्न चिह्न लग गया क्योंकि यह माना गया कि कोई भी दृश्य विवरण चयनात्मक और अपूर्ण होता है। एक मानवविज्ञानी छायाचित्रण और चलचित्रण से संबंधित विभिन्न पहलुओं के बारे में चयन करता है जो तथ्यों को छुपा सकता है। अवलोकन सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सामूहिक मानदंडों और प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुभवों में निहित है और ये सभी आवश्यक रूप से विवरण को प्रभावित करते हैं। साथ ही, प्रतिभागियों की यह जागरूकता कि उन्हें देखा जा रहा है, उनके दिखावा करने का कारण बनता है, जो विवरणों को विकृत करता है। हाल के दिनों में, आत्मनिरीक्षण, सहभागी एवं छायाचित्र स्वर आंदोलनों ने सुधारात्मक पद्धतियों के पुनर्निरूपण में सार्थक योगदान दिया है, क्योंकि क्षेत्र में लोगों के हाथों में कैमरा देने की वर्तमान प्रवृत्ति शोधकर्ता के व्यक्तिगत पूर्वाग्रह को सम्मिलित करने की संभावना को समाप्त कर देती है। (चित्र-14)

चित्र-13: ब्रोनिस्लॉ मैलिनोस्की द्वारा ट्रोब्रिएंड द्वीपवासियों पर किए गए गहन क्षेत्रकार्य पर आधारित पुस्तक 'अरगोनॉट्स ऑफ़ द वेस्टर्न पैसिफ़िक' में एक अनुष्ठानिक क्रिया – 'कूला' का छायाचित्र (मैलिनॉस्की, 1922)

चित्र-14: मसाई समाज में छायाचित्र स्वर के माध्यम से ट्रैकोमा नियंत्रण एवं महिला सशक्तिकरण की द्विउद्देशीय परियोजना के तहत डिस्पोजेबल कैमरों के उपयोग का अभ्यास करती हुई मसाई प्रतिभागियों का एक छायाचित्र (एमटाय एवं अन्य, 2021)

8. मानवविज्ञानी की उपस्थिति व्यामार्जित करने से उसकी पुष्टि तक: कैमरे के पीछे रहकर, नृवंशविज्ञानी अनुसंधान से अपनी उपस्थिति को मिटाने की कोशिश करते रहे हैं, (चित्र-15) हालांकि यह सोचना अवास्तविक लगता है कि लोग कैमरे को भूल सकते हैं। एक पर्यवेक्षक की साधारण उपस्थिति अपने आप में बाधा उत्पन्न करती है, चाहे उसके पास कैमरा हो या नहीं। वह हमेशा ही क्षेत्र पर लोगों के लिए एक बाहरी व्यक्ति होता है, चाहे

वह स्वयं को उन लोगों की संस्कृति में एकीकृत कर उनके स्तर पर ही क्यों ना आ जाए। इसलिए, लोगों को कैमरे और शोधकर्ता की उपस्थिति को भुलवाने के प्रयास में स्वयं को छिपाने की कोशिश करने के बजाय, कैमरे को वार्तालाप के केंद्र में रखने की प्रवृत्ति विकसित हुई है। (चित्र-16) अब कैमरे की उपस्थिति के कारण होने वाले व्यवहार में परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए वार्तालाप एवं क्रियाकलापों को चलचित्रित करने को महत्व दिया जा रहा है।

चित्र-15: अल्फ्रेड कॉर्ट हैडेन द्वारा बनाया गया प्रथम मानवशास्त्रीय चलचित्र – 'कैम्ब्रिज ऐन्थ्रोपोलोजिकल एक्सपेडीशन टू टोरेस स्ट्रेट्स' का एक दृश्य (हैडेन, 1898-1899)

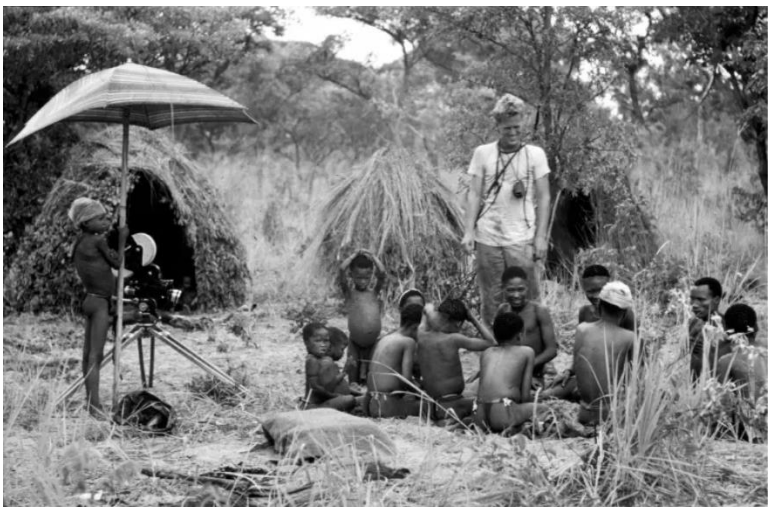

चित्र-16: 1950 के दशक में कालाहारी लोगों के मध्य जॉन मार्शल अपनी कैमरा सेटिंग के साथ 'ए कालाहारी फैमिली' चलचित्र के एक दृश्य की तैयारी करते हुए (डूरिंगटन, 2004)

9. विलुप्त हो रही संस्कृतियों के नृवंशवैज्ञानिक अध्ययनों से व्यावहारिक हस्तकक्षेप तक: उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान, छायाचित्रकारों ने विदेशी भूमि और विविध लोगों की छवियों को लेने के लिए दुनिया की यात्रा की। छायाचित्रण ने कैमरे की सत्य एवं निष्पक्ष दृष्टि के साथ शोध में लिखित विवरणों और रेखाचित्रों का स्थान ले लिया क्योंकि उपनिवेशीकरण और राष्ट्रीयताओं के समरूपीकरण के कारण विश्व के लुप्तप्राय सांस्कृतिक समूहों के सुरक्षित विवरण एकत्रित करने पर जोर दिया गया। छायाचित्रण और चलचित्रण ने यह देखना और जानना संभव बना दिया था कि मूल निवासियों कि देशज संस्कृतियाँ कैसी दिखती थीं और वे लोग कैसे रहते थे, (चित्र-17) लेकिन इनमें से कई छवियों को प्राप्त करना एक बड़ी चुनौती थी। अक्सर नृवंशविज्ञानियों को प्रतिरोधी लोगों से संपर्क करना पड़ता था, जिन्हें कैमरे या इसके पीछे के व्यक्ति की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बारे में

कोई जानकारी नहीं होती थी। बाद में, यह परिदृश्य बदल गया है, क्योंकि वर्तमान में दृश्य नृविज्ञान में छायाचित्र स्वर की अवधारणा ने मानव विज्ञान और मानव विज्ञान से परे विभिन्न प्रकार के हस्तक्षेपों की पहल की है, जिसमें एक सशक्तिकरण रणनीति की प्रक्रिया के एक हिस्से के रूप में स्थानीय सहभागियों को कैमरे दिए जाते हैं। इसका लक्ष्य लोगों के दैनिक जीवन के छवि प्रलेखीकरण को संग्रहित करना और उसको उनकी आवश्यकताओं को दर्शाने, संवाद को बढ़ावा देने, कार्यवाही को प्रोत्साहित करने और उनके लिए नीति बनाने के लिए एक उपकरण के रूप में इसका उपयोग करना है। (चित्र-18)

चित्र-17: वाल्टर बाल्डविन स्पेंसर द्वारा रिकॉर्ड किए गए ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों के 'त्जितजिंगल्ला' नृत्य का एक दृश्य (स्पेंसर, 1901)

चित्र-18: 'एम्पावरमेंट थ्रू फोटो नोवेला – 'पोर्ट्रेट्स ऑफ पार्टिसिपेशन' में दर्शित, सहभागी चेंगजियांग किसान झू यू झेन, द्वारा लिया गया एक छायाचित्र – 'भोजन खिलाते हुए' (वाँग एवं बुरिस, 1994)

10. प्लेट कैमरों के उपयोग से उन्नत तकनीक तक: 'लुप्त हो रही जनजातियों' को विशेष महत्व देने वाली सांस्कृतिक चर्चा ने मानवविज्ञानियों को दृश्य क्षेत्रकार्य करने के लिए प्रेरित किया। यह कार्य सर्वप्रथम प्लेट कैमरों के साथ किया गया, तत्पश्चात नए हाथ से थामे रखे जाने वाले कैमरों के साथ, और अंततः सिने-कैमरों के साथ किया गया। नृवंशविज्ञान अध्ययन के दौरान कुछ प्रारम्भिक चलचित्र 'लुमीएरे' उपकरण द्वारा बनाए गए थे। (चित्र-19) अक्सर छायाचित्रकारों के लिए उन आक्रामक वनवासियों को मनाना अत्यंत कठिन कार्य होता था, जिन्हें कैमरे और उसके पीछे एक बड़े बक्से पर झुक कर और कपड़े के अंदर छिपकर उनकी तस्वीरें लेने या उनका चलचित्र बनाने वाले अनजान व्यक्ति की कोई समझ नहीं होती थी। हाल के दशकों में दृश्य नृविज्ञान के

प्रतिरूप को बदलने वाली नई संचार प्रौद्योगिकियां सामने आई हैं। 1970 और 1980 के दशक में सुवाह्य दृश्य श्राव्य प्रौद्योगिकियों की सुलभता ने देशज फिल्म निर्माताओं को प्रतिनिधित्ववादी परंपरा में प्रत्यक्ष योगदान देने में सक्षम बनाया। देशज संचार माध्यम और संचार माध्यम नृविज्ञान के नवविकसित क्षेत्रों ने विविध सांस्कृतिक संदर्भों और उनके पार सांस्कृतिक संचार में छायाचित्रण और चलचित्रण को प्रोत्साहित किया है। इक्कीसवीं सदी में, छायाचित्रण और चलचित्रण प्रौद्योगिकियों का अंकरूपण और विश्व व्यापी वेब के माध्यम से उनका वितरण दृश्य नृविज्ञान के लिए वैश्विक गतिशीलता का एक वाहन बन गया है। (चित्र-20)

चित्र-19: 'नानूक ऑफ द नॉर्थ' (1922) के चलचित्रण के दौरान रॉबर्ट जोसेफ फ्लेहर्टी के सहायक बॉब स्टीवर्ट अपने प्रारम्भिक कैमेरे के साथ एस्कीमो लोगों के बीच (रोधा, 1980)

चित्र-20: सहभागी मानवविज्ञान के अंतर्गत 'डेल्ही एट एलेवन' परियोजना के दौरान चलचित्र बनाने हेतु बच्चे डिजिटल कैमरे से ट्रैनिंग लेते हुए (मैकडॉगल, 2012)

5. निष्कर्ष

दृश्य नृविज्ञान दृश्य प्रणालियों के अध्ययन से संबंधित है और मानववैज्ञानिक ज्ञान के उत्पादन की प्रक्रियाओं के रूप में कार्य करता है। दृश्य नृविज्ञान का दायरा व्यापक है, जिसमें छायाचित्र, चलचित्र और कलात्मक प्रस्तुतियों से लेकर भौतिक संस्कृति, शारीरिक अभिव्यक्ति और स्थान विषयक प्रारूप के निर्माण और विश्लेषण सम्मिलित हैं। व्यापक अर्थ में, यह उन सभी चीजों की जांच है जो मनुष्य दूसरों को देखने के लिए निर्मित करते हैं। दृश्य नृविज्ञान

में वह व्यक्ति जिसका छायाचित्र या चलचित्र लिया गया है और व्यक्ति की छवि दोनों का अध्ययन सम्मिलित है। छायाचित्रण एवं चलचित्रण, एक ही समय में, अनुसंधान के उपकरण और क्षेत्र दोनों ही हैं। समय के साथ इनके प्रतिमानों एवं रुझानों में निरंतर परिवर्तन या रहे हैं जो कि वर्तमान परिदृश्य की एक मांग है। अनुसंधान के क्षेत्र के रूप में इसका अध्ययन करके, छायाचित्रण एवं चलचित्रण के उपयोग के माध्यम से मानववैज्ञानिक अवलोकन और अंतर्दृष्टि के संचार को बढ़ाने के लिए एक समझ विकसित की जा सकती है, जिसे मानव कल्याण के महान लक्ष्य में व्यावहारिक रूप से प्रयोग किया जा सकता है।

संदर्भिका

अशर, एम. 2015. रिव्यू – डेल्ही ऐट एलेवन. द एशिया पैसिफिक जर्नल ऑफ एंथ्रोपोलॉजी 16 (1): 93-95. डी. ओ. आई.: 10.1080/14442213.2014.980769

एडवर्ड्स, ई. (संपादक) 1992. एंथ्रोपोलॉजी एंड फोटोग्राफी, 1860-1920. लंदन: द रॉयल एंथ्रोपोलॉजिकल इंस्टीट्यूट.

एमटाय, टी. बी., मेपुकोरी, जे., लंकोई, जे. एवं लीज़, एस. 2021. एम्पॉवरिंग मसाई वूमेन बिहाइन्ड द कैमरा: फोटोवॉइस एज़ अ टूल फॉर ट्रैकोमा कंट्रोल. रिसर्च इन्वॉल्वमेंट एंड एंगेजमेंट 7: 51. डी. ओ. आई.: 10.1186/s40900-021-00286-x

कर्टिस, ई. एस. 2015. द नॉर्थ अमेरिकन इंडियन, वॉल्यूम XX (1930): नुनिवाक, किंग आइलैंड, लिटिल डायोमेड आइलैंड, केप प्रिंस ऑफ वेल्स, कोटजेबु. द कम्पलीट पोर्टफोलियो, तस्चेन-बिब्लियोथेका युनिवर्सलिस: 736-767.

गिंडी, एफ. 1998. फ्रॉम पिक्टोरियलाइजिंग टू विज़ुअल एंथ्रोपोलॉजी. हैंडबुक ऑफ मैथड्स इन कल्चरल एंथ्रोपोलॉजी (संपादक - बर्नार्ड, एच. आर.). वॉलनट क्रीक, लंदन, न्यू डेल्ही: अल्टामीरा प्रेस – ए डिवीजन ऑफ सेज पब्लिकेशन्स इंक.: 495-511.

गिब्सन, जे. 2015. सेंट्रल ऑस्ट्रेलियन सोंग्स: ए हिस्ट्री एण्ड रीइंटरप्रिटेशन ऑफ देयर डिस्ट्रीब्यूशन थ्रू द अर्लीएस्ट रिकॉर्डिंग्स. ओशिनिया 85 (2): 165-182.

गैरिसन, डब्ल्यू. 2000. ब्रैडी'ज़ सिविल वॉर: ए कलेक्शन ऑफ सिविल वॉर इमेजेज़ फोटोग्राफ्ड बाइ मैथ्यू ब्रैडी एण्ड हिज़ असिस्टेंट्स. न्यूयॉर्क: द ल्योंस प्रेस.

चक्रबर्ती, एम., दास, के. एवं मुखर्जी, के. 2021. विज़ुअल एंथ्रोपोलॉजी: ए सिस्टमैटिक रिप्रेजेंटेशन ऑफ एथ्नोग्राफी. एथेंस जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज 9: 1-16.

जैकनिन्स, आई. 1994. सोसाइटी फॉर विज़ुअल एंथ्रोपोलॉजी. एंथ्रोपोलॉजी न्यूज़लैटर 35 (4): 33-34.

डायोन, डी. 2007. द कॉन्ट्रिब्यूशन मेड बाइ विज़ुअल एंथ्रोपोलॉजी टू द स्टडी ऑफ कंजम्पशन बिहेवियर. रीचर्चेट एपलिकेशन्स इन मार्केटिंग 22 (1): 61-78. डी. ओ. आई.: 10.1177/205157070702200104

डूरिंगटन, एम. 2004. जॉन मार्शल'स कालाहारी फैमिली. अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिस्ट 106 (3): 589-594.

द न्यू ब्रेशम इनसाइक्लोपीडिया. 1922. एथनोलॉजी एंड एथनोग्राफी. द न्यू ब्रेशम इनसाइक्लोपीडिया 4 (3): एस्ट्रेमोज़ टू फ़ेलस्पर. लंदन: द ब्रेशम पब्लिशिंग कंपनी: 303-304.

पाउडरमेकर, एच. 1950. हॉलीवुड, द ड्रीम फैक्ट्री: एन एंथ्रोपोलॉजिस्ट स्टडीज द मूवी मेकर्स. बोस्टन: लिटिल, ब्राउन एंड कंपनी.

बेटसन, जी. एवं मीड, एम. 1942. बालिनीज कैरेक्टर: ए फोटोग्राफिक एनालिसिस. स्पेशल पब्लिकेशन्स ऑफ न्यूयॉर्क एकेडमी ऑफ साइंसेज, वॉल्यूम II, विल्बर जी. वेलेंटाइन (संपादक).

बैंक्स, एम. एवं मोर्फी, एच. (संपादक). 1997. रिथिंकिंग विज़ुअल एंथ्रोपोलॉजी. येल यूनिवर्सिटी प्रेस.

बैंक्स, एम. एवं रूबी, जे. (संपादक). 2011. मेड टू बी सीन: पर्सपेक्टिव्स ऑन द हिस्ट्री ऑफ विज़ुअल एंथ्रोपोलॉजी. शिकागो एवं लंदन: द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

बैंक्स, एम. एवं वोक्स, आर. 2010. इन्ट्रोडक्शन: एंथ्रोपोलॉजी, फोटोग्राफी एंड द आर्काइव. हिस्ट्री एण्ड एंथ्रोपोलॉजी 21 (4): 337-349. डी. ओ. आई.:10.1080/02757206.2010.522375

बोआस, एफ. 1895. द सोशल ऑर्गेनाइजेशन एंड द सीक्रेट सोसाइटीज ऑफ द क्वाकीटल इंडियंस. रिपोर्ट ऑफ द यू. एस. नेशनल म्यूज़ियम फॉर 1895: 311-738.

मकांटा, डब्ल्यू.एन., रोज़मेरी, डब्ल्यू.ई., मिशेल, सी. आर., अबीर, डी.ए., ट्रेवर, डी., इमैनुएल, यू.ई., ऐश्वर्या, पी. 2018. फ्रॉम इमेजेज टू वॉइसेज: ए फोटो एनालिसिस ऑफ मेडिकल एंड सोशल सपोर्ट नीड्स ऑफ पीपुल लिविंग विद एचआईवी/एड्स इन तंजानिया. जर्नल ऑफ़ ग्लोबल हेल्थ रिपोर्ट्स 2: e2018031. डी. ओ. आई.: 10.29392/joghr.2.e2018031

मीड एम. 1974. विज़ुअल एंथ्रोपोलॉजी इन ए डिसिप्लिन ऑफ़ वर्ड्स. प्रिन्सिपल्स ऑफ विज़ुअल एंथ्रोपोलॉजी (संपादक - हॉकिंग्स, पी.). बर्लिन: माउटन डी ब्रुइटर: 3-10.

मीड, एम. एवं मेट्रॉक्स, आर. (संपादक). 1953. द स्टडी ऑफ कल्चर ऐट ए डिस्टेन्स. शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

मैलिनॉस्की, बी. 1922. अरगोनॉट्स ऑफ़ द वेस्टर्न पैसिफ़िक: एन अकाउंट ऑफ़ नेटिव एंटरप्राइज़ एंड एडवेंचर इन द आर्किपेलागोज़ ऑफ़ मेलनेशियन न्यू गिनी. लंदन: रूटलेज एंड केगन पॉल लिमिटेड, न्यूयॉर्क: ई.पी. डटन एंड कंपनी, इंक.

रूबी, जे. 1995. आउट ऑफ़ सिंक: द सिनेमा ऑफ़ टिम एश. विज़ुअल एंथ्रोपोलॉजी रिव्यू 11 (1): 19-37. डी. ओ. आई.: 10.1525/var.1995.11.1.19

रेगनॉल्ट, एफ. 1895. लेस आर्टिस्ट्स प्राहिस्टोरिक्स डी'एप्रेस लेस डर्निऐरेस डेकोवर्ट्स. ला नेचर 1167: 305–307.

रेडक्लिफ-ब्राउन, ए. आर. 1922. द अंडमान आइलैंडर्स: ए स्टडी इन सोशल एंथ्रोपोलॉजी (एंथनी विल्किन स्टूडेंटशिप रिसर्च, 1906). कैम्ब्रिज, यूके: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

रोधा, पी. 1980. नानूक एण्ड द नॉर्थ. स्टडीज़ इन विज़ुअल कम्युनिकेशन 6 (2): 33-60.

लाजार्ड, डी. एवं रेग्नॉल्ट, एफ. 1895. पोटेरी क्रू एट ऑरिजिन डू टूर. बुलेटिन डे ला सोसाइटी डी एंथ्रोपोलॉजी डे पेरिस 4 (6): 734-739. डी. ओ. आई.: 10.3406/bmsap.1895.5623

वर्थ, एस. एवं एडेयर, जे. 1972क. थ्रू नवाजो आइज: एन एक्सप्लोरेशन इन फिल्म कम्युनिकेशन एंड एंथ्रोपोलॉजी. ब्लूमिंगटन: इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस.

वॉंग, सी. एवं बुरिस, एम. ए. 1994. एम्पावरमेंट थ्रू फोटो नोवेला: पोर्ट्रेट्स ऑफ पार्टिसिपेशन. हेल्थ एजुकेशन एण्ड बिहेवियर 21 (2): 171-186. डी. ओ. आई.: 10.1177/109019819402100204

वॉंग, सी. और बूरिस, एम. ए. 1997. फोटोवॉइस: कॉन्सेप्ट, मेथडोलॉजी एण्ड यूज़ फॉर पार्टिसिपेटरी नीड्स असेसमेंट. हेल्थ एजुकेशन एण्ड बिहेवियर 24 (3): 369-387. डी. ओ. आई.: 10.1177/109019819702400309

विल्सन, आर. 2013. मैथ्यू ब्रैडी: पोर्ट्रेट्स ऑफ ए नेशन. न्यूयॉर्क: ब्लूम्सबरी यू. एस. ए.

श्रीवास्तव, एस. 2022. विज़ुअल एंथ्रोपोलॉजी: चेंजिंग रोल्स इन फील्डवर्क. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मॉडर्न एंथ्रोपोलॉजी 2 (17): 843-871. डी. ओ. आई.: http://dx.doi.org/10.4314/ijma.v2i17.8

सटन-ब्राउन, सी. ए. 2014. फोटोवॉइस: ए मेथोडोलॉजिकल गाइड. फोटोग्राफी एण्ड कल्चर 7 (2): 169-185. डी. ओ. आई.: 10.2752/175145214X13999922103165

हिम्पेले, जे. एवं जिन्सबर्ग, एफ. (संपादक) 2005. विजुअल एंथ्रोपोलॉजी. सिने-ट्रान्स: ए ट्रिब्यूट टू जीन रॉच (1917-2004). अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिस्ट 107 (1): 108-129.

हेन्ले, पी. 2013. फ्रॉम डॉक्यूमेंटेशन टू रिप्रेजेंटेशन: रिकवरिंग द फिल्म्स ऑफ मार्गरेट मीड एंड ग्रेगरी बेटसन. विजुअल एंथ्रोपोलॉजी 26: 75-108. डी. ओ. आई.: 10.1080/08949468.2013.751857

हेरले ए., फिलप, जे. एवं डुडिंग, जे. 2015. रीएक्टिवेटिंग विजुअल हिस्ट्रीज़: हैडन्स फ़ोटोग्राफ़्स फ्रॉम मबुयाग 1888, 1889. मेमोयर्स ऑफ़ द क्वींसलैंड म्यूज़ियम/कल्चर 8 (1): 253-288.

चलचित्र संदर्भिका

ऐश, टी. 1975. द एक्स फाइट. https://mediahub.unl.edu/media/8396

गार्डनर, आर. 1963. डेड बर्ड. https://www.dailymotion.com/video/x7fi3ay

फ़्लेहर्टी, आर. जे. 1922. नानूक ऑफ़ द नॉर्थ. https://publicdomainmovies.info/nanook-north-1922/

मार्शल, जे. 2002. ए कालाहारी फैमिली, 5 भाग (1951 से 2000). https://store.der.org/a-kalahari-family-p937.aspx

मीड, एम. एवं बेटसन, जी. 1952. ट्रान्स एंड डांस इन बाली. https://www.loc.gov/item/mbrs02425201/

मैकडॉगल, डी. 2012. डेल्ही एट इलेवन (रवि शिवहरे, अंशु सिंह, अनिकेत कुमार कश्यप, शिखा कुमार दलसस द्वारा रिकॉर्ड किया गया). https://video-alexanderstreet-bc.orc.scoolaid.net/watch/delhi-at-eleven

रॉच, जे. 1955. लेस माइट्रेस फ़ोस. https://www.filmaffinity.com/uy/film198082.html

रेगनॉल्ट, एफ. एल. 1885. क्रोनोफोटोग्राफिक शॉट्स. https://www.dailymotion.com/video/x1hr8g

वर्थ, एस. एवं अडेयर, जे. 1972ख. नवाजो फिल्म देमसेल्व्स ट्रेलर (माइक एंडरसन, अल क्लाह, सूसी बेनाली, जॉनी नेल्सन, मैरी जेन त्सोसी और मैक्सिन त्सोसी द्वारा रिकॉर्ड किया गया). https://alchetron.com/Navajo-Film-Themselves

स्पेंसर, डब्ल्यू. बी. 1901. ऑस्ट्रेलियन एबोरिजिनल्स' 'त्जितजिंगल्ला' डांस. https://collections.museumsvictoria.com.au/articles/6785

हैडेन, ए. सी. 1898-1899. कैम्ब्रिज एंथ्रोपोलॉजिकल एक्सपीडिशन टू टोरेस स्ट्रेट्स. https://alchetron.com/Alfred-Cort-Haddon